भारत का उदय: आर्थिक समृद्धि का एक नया युग

सकल घरेलू उत्पाद में 7% की अनुमानित वृद्धि और 151,000 से अधिक स्टार्टअप के साथ, भारत अपनी अर्थव्यवस्था को नया आकार दे रहा है

भारत और चीन, दो सबसे बड़ी उभरती अर्थव्यवस्थाएँ लगातार वैश्विक आर्थिक चर्चाओं में सबसे आगे रही हैं। हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित वार्षिक भारत नेतृत्व शिखर सम्मेलन में इन आर्थिक दिग्गजों के बीच बदलती गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित किया गया। जहां पिछले दशकों में चीन की तीव्र वृद्धि ने उसे वैश्विक मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी बना दिया है, भारत की हालिया वृद्धि ने पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया है, जिससे भारत एक मजबूत दावेदार के रूप में सामने आया है।

विकास के पथ पर लगातार आगे बढ़ते इस घटनाक्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, यूएस-इंडिया स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप फोरम के अध्यक्ष जॉन चैंबर्स ने टिप्पणी करते हुए कहा, "इस सदी के अंत तक, भारत न केवल चीन से आगे निकल जाएगा, बल्कि सकल घरेलू उत्पाद के मामले में 100 प्रतिशत बड़ा होगा"। उनका ये आशावादी बयान महज़ मज़बूत भविष्यवाणियों में निहित नहीं था, बल्कि पिछले दशक में भारत द्वारा की गई उस ठोस प्रगति के आधार पर था, जो परिवर्तनकारी नीतियों और सुधारों से प्रेरित थीं और जिन्होंने इसके आर्थिक परिदृश्य को नया आकार दिया। इसने देश के असाधारण उत्थान और वैश्विक मंच पर इसकी भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा का माहौल तैयार किया।

चेम्बर्स सिर्फ दूरगामी भविष्य तक ही नहीं रुके। उन्होंने भारत सरकार को उसके प्रयासों का श्रेय देते हुए, उस नींव का ज़िक्र किया जो पहले ही रखी जा चुकी है। उन्होंने कहा, "पहले पांच वर्षों के लिए, मैं तर्क दूंगा कि इस प्रशासन ने एक दशक के लिए मंच तैयार करने का अद्भुत काम किया।" उनकी यह टिप्पणी भारत के असाधारण आर्थिक प्रदर्शन की पृष्ठभूमि में आई है, जिसमें विकास की गति तेजी से बढ़ रही है। विश्व बैंक के भारत विकास अपडेट के अनुसार, देश की जीडीपी वित्त वर्ष 2024-25 में 7% की मजबूत दर से बढ़ने का अनुमान है, जो दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में इसकी स्थिति को दर्शाती है। विकास की यह गति लगातार बनी हुई है, वित्त वर्ष 2022-23 में सकल घरेलू उत्पाद 7.0% से बढ़कर वित्त वर्ष 2023-24 में 8.2% हो गया है। ये आंकड़े न केवल भारत की अर्थव्यवस्था के लचीलेपन को दर्शाते हैं, बल्कि एक सुनियोजित रणनीति के अच्छे नतीजे दिखाते हैं। भारत की तीव्र वृद्धि के विपरीत, चीन की आर्थिक विकास पथ ज्यादा धीमा प्रतीत होता है। विश्व बैंक ने चीन की 2024 में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 4.8% रहने का अनुमान लगाया है, जो 2025 में और धीमी होकर 4.3% हो जाएगी।

भारत के सकारात्मक आर्थिक दृष्टिकोण पर आधारित, सेबी के पूर्णकालिक सदस्य अनंत नारायण जी ने एनएसई में निवेशक जागरूकता सप्ताह के दौरान भारत के प्रभावशाली बाजार प्रदर्शन पर प्रकाश डाला। पिछले पांच वर्षों में भारतीय बाजारों ने लगातार करीब 15 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर दी है, चीन के बाजार इसके करीब भी नहीं हैं। यह लगभग शून्य है। वास्तव में, कुछ मामलों में, जैसे कि

हांगकांग में यह वास्तव में नकारात्मक है," उन्होंने कहा। नारायण ने इस बात पर जोर दिया कि वित्त वर्ष 2024 एक असाधारण वर्ष था, जिसमें बेंचमार्क सूचकांकों में 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि अस्थिरता कम होकर केवल 10 प्रतिशत रही । उन्होंने इसे "सोने पे सुहागा" के रूप में वर्णित किया और इसे कम जोखिम और उच्च रिटर्न का एक आदर्श संयोजन करार दिया।

बाजार के प्रदर्शन के अलावा, भारत के विकास की जड़ें डिजिटल इंडिया जैसी रणनीतिक पहलों में खोजी जा सकती हैं, जिसे चैंबर्स ने देश की आर्थिक रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक बताया। उन्होंने कहा, डिजिटल इंडिया सिर्फ एक सपना नहीं था। यह इस बात की समझ थी कि बाज़ार किस तरफ जाएगा" । साल 2015 में शुरू की गई इस पहल का मकसद भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज में बदलना था और उसके परिणाम उल्लेखनीय से कम नहीं हैं। डिजिटल इंडिया के सबसे महत्वपूर्ण नतीजों में से एक यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) द्वारा लाया गया परिवर्तन है, जिसने भारतीयों के लेनदेन करने के तरीके को नया आकार दिया है। वित्त वर्ष 2017-18 में 92 करोड़ लेनदेन से बढ़कर वित्त वर्ष 2023-24 में 13,116 करोड़ लेनदेन तक, यूपीआई की वृद्धि डिजिटल भुगतान को व्यापक रूप से अपनाने पर प्रकाश डालती है। इस सफलता ने सुविधाओं को फिर से परिभाषित किया है और भारत को डिजिटल वित्त में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित किया है।

UPI से परे, कोविड-19 महामारी के दौरान सीओडब्ल्यूआईएन प्लेटफ़ॉर्म एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरा, जो भारत के टीकाकरण अभियान के लिए डिजिटल रीढ़ के तौर पर काम कर रहा है। इसने सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की देश की क्षमता को प्रदर्शित करते हुए, एक भी दिन की देरी किए बिना 220 करोड़ से अधिक खुराक देने में प्रशासन को सक्षम बनाया। सीओडब्ल्यूआईएन न केवल वैश्विक संकट के प्रति भारत की प्रभावी प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि यह भी साबित करता है कि कैसे डिजिटल बुनियादी ढांचा, बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य पहलों का समर्थन कर सकता है।

कुल मिलाकर ये उपलब्धियाँ दर्शाती हैं कि डिजिटल इंडिया ने दीर्घकालिक विकास के लिए तैयार डिजिटल रूप से समावेशी अर्थव्यवस्था के लिए, आधार तैयार कर दिया है। इस डिजिटल क्रांति का प्रभाव भुगतान और पहचान सत्यापन से भी आगे तक फैला हुआ है। आयुष्मान भारत योजना के तहत 35.6 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड जारी किए गए हैं, जिससे लाखों लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गई है। इसके अलावा, 9 करोड़ से अधिक फास्टैग्स जारी किए गए हैं, जो 2023 में लगभग दुनिया भर में निर्मित वाहनों की संख्या के बराबर है और जिससे देश के राजमार्गों पर सुगम यात्रा की सुविधा मिलती है। इस तरह के मील के पत्थर भारत के डिजिटल परिवर्तन की व्यापक प्रकृति को दिखाते हैं, जो जीवन के हर पहलू को छूते हैं और सतत् आर्थिक उन्नति को बढ़ावा देते हैं।

चैंबर्स ने भारत में स्टार्टअप्स की विस्फोटक वृद्धि को देश की आर्थिक वृद्धि में एक महत्वपूर्ण कारक करार दिया। उन्होंने कहा कि, सिर्फ 10 से 12 साल पहले, भारत में बहुत कम स्टार्टअप थे। वास्तव में, साल 2015 से 2022 तक स्टार्टअप्स में निवेश 15 गुना बढ़ गया "। निवेश में इस उछाल ने एक गतिशील उद्यमशीलता के माहौल को बढ़ावा दिया है। 151,000 से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स के

साथ भारत अब दुनिया के तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप्स का घर है। वर्ष 2016 में शुरू की गई स्टार्टअप इंडिया पहल ने 15.5 लाख से अधिक प्रत्यक्ष नौकरियां पैदा करके इस विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह इस बात का प्रमाण है कि कैसे सही नीतियों की मदद से नवाचार, गंभीर चुनौतियों का समाधान करते हुए आर्थिक विकास को आगे बढ़ा सकता है।

चैंबर्स ने आर्टिफिशियल इटेलीजेंस के दायरे पर भी बात की, एक ऐसा क्षेत्र जो भारत में बेहद आकर्षण प्राप्त कर रहा है। सरकार द्वारा 2023 में "भारत के लिए एआई 2.0" जैसी पहल शुरू करने और 2024 में ग्लोबल इंडियाएआई शिखर सम्मेलन की मेजबानी के साथ, यह साफ है कि भारत वैश्विक मंच पर खुद को एआई में अग्रणी के रूप में स्थापित कर रहा है। चैंबर्स ने कहा, "भारत ने एआई के लिए आधार तैयार कर लिया है और यह उसके कार्यबल की अगली पीढ़ी को आकार देगा।" शिखर सम्मेलन दुनिया भर से 12,000 से अधिक विशेषज्ञों को एक साथ एक मंच पर लाया, जो एआई में भारत के बढ़ते प्रभाव और भविष्य की आर्थिक सफलता के लिए इस तकनीक का उपयोग करने की प्रतिबद्धता दर्शाता है। एआई पर यह फोकस महज़ तकनीकी प्रगति के बारे में नहीं है, बल्कि भविष्य की नौकरियों में कुशल कार्यबल तैयार करने के बारे में है, जो निरंतर आर्थिक विकास को सुनिश्चित करता है।

हालाँकि, भारत की आर्थिक कहानी केवल शीर्ष पर विकास के बारे में नहीं है। चैंबर्स की टिप्पणियाँ इन पहलों के व्यापक प्रभाव पर भी प्रकाश डालती हैं। प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) जैसी योजनाओं द्वारा संचालित डिजिटल समावेशन ने पहले बैंकिंग सुविधा से वंचित लाखों व्यक्तियों को अब औपचारिक वित्तीय प्रणाली का हिस्सा बनाया है। एक दशक पहले अपनी स्थापना के बाद से, पीएमजेडीवाई ने 53 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले हैं, जिससे लोगों को वित्तीय सेवाओं तक पहुंचने और अर्थव्यवस्था में भाग लेने में सक्षम बनाया गया है। इस प्रकार का जमीनी स्तर का विकास यह सुनिश्चित करने के लिए अहम है कि भारत का विकास समावेशी है और समृद्धि का लाभ देश के हर कोने तक पहुंच रहा है।

आवास एक अन्य क्षेत्र है, जहां समावेशी विकास साफ दिखाई देता है, खासकर मध्यम वर्ग के लिए। प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (पीएमएवाई-यू) के तहत, 1.18 करोड़ से अधिक घर स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से 87.25 लाख से अधिक पहले ही निर्मित और वितरित किए जा चुके हैं। यह महत्वाकांक्षी आवास पहल, किफायती घर चाहने वाले मध्यम वर्ग सहित लाखों परिवारों को सुरक्षित और हर मौसम के लिए उपयुक्त घर प्रदान करके उनका जीवन बदल रही है। इस योजना के ठोस परिणाम इस बात का एक और संकेत हैं कि कैसे भारत दीर्घकालिक विकास की नींव रख रहा है और यह सुनिश्चित कर रहा है कि कोई भी पीछे न छूटे, स्थिरता को बढ़ावा मिले और लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो।

भविष्य की बात करते हुए चेम्बर्स का स्वर आशावादी था, लेकिन वास्तविकता पर आधारित था। उन्होंने कहा, "नींव सिर्फ अगले पांच साल के लिए नहीं, बल्कि अगले 25 साल के लिए रखी गई है।" उनका यह विश्वास, कि सदी के अंत तक भारत चीन की आर्थिक ताकत को पार कर जाएगा, कुछ

लोगों के लिए महत्वाकांक्षी लग सकता है, लेकिन पिछले दशक में देश की प्रगति उनके शब्दों को बल देती है। डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाने, स्टार्टअप्स के उदय, शेयर बाजार का प्रदर्शन, एआई पर मजबूत फोकस और समावेशी विकास के प्रति प्रतिबद्धता के साथ, भारत एक ऐसे पथ पर है जो आने वाले वर्षों में वैश्विक आर्थिक गतिशीलता को फिर से परिभाषित कर सकता है।

संदर्भ:

- https://www.worldbank.org/en/news/press-release/2024/09/03/india-s-economy-to-remain-strong-despite-subdued-global-growth
- https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2057013#:~:text=UPI%20has%20revolutionised%20digital%20payments,volume%20has%20reached%207%2C062%20crore.
- https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1894907
- https://x.com/mygovindia/status/1807618997178843527
- https://dashboard.pmjay.gov.in/pmj/#/
- https://www.startupindia.gov.in/
- https://pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=153203&ModuleId=3&reg=3&lang=1
- https://pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=151932&ModuleId=3&reg=3&lang=1
- https://pmjdy.gov.in/
- https://pmay-urban.gov.in/
- https://www.worldbank.org/en/news/press-release/2024/06/14/-structural-reforms-needed-to-sustain-growth-momentum-world-bank-report
- https://openknowledge.worldbank.org/server/api/core/bitstreams/b881d2ff-9912-4eb6-9698-8f151975abb6/content

(Backgrounder ID: 153357)